परियोजना प्रस्ताव
विविध सांस्कृतिक परम्पराओं का संरक्षण के अन्तर्गत जनजातिय नृत्य दशंय का प्रशिक्षण एवं प्रलेखिकरण

जनजातिय नृत्य दशंय

स्वरुप – यह नृत्य झारखण्ड के पहाड़ों गाँवों में रहने वाले जनजातिय समुदाय संथालों का महत्वपूर्ण लोक नृत्य है। यह नृत्य विशेष कर सितम्बर–अक्टुबर माह में होती है, जो दुर्गा पूजा के विजया दशमी के दिन समाप्त होता है। इसमें कलाकार बदन पर रंग–बिरंगे संथाली धोती–गंजी , सिर पर मौर पंख बाँधकर काँसार घण्टा बुआंग, मादर, झांझ आदि बाद्य यंत्र के ताल पर नृत्य करते है। यह नृत्य दल 20–25 कलाकारों की टोली होती है।

पौराणिक महत्व – प्रचलित कथानुसार जब देवी दसभूजा के सृष्टि के समय बादल गरजने के साथ धरती फट गया और माँ देवी दूर्गा की जन्म हुआ। उस समय देवी दूर्गा जी को कोई नहीं पूछा और न ही उसकी पूजा किया तब मन–ही–मन उदास होकर देवी इस धरती को छोड़कर जा रही थी। तब मानव (संथाल) समुदाय देवी को वापस लाने हेतु सोचा और सभी लोग उसको संतुष्ट करने के लिए निकल पड़े। शंख और शांकुवा बजाने लगा, उसके बाद शंख का नाम बुआंग गुरु और शांकुवा का नाम कामरु गुरु हुआ। ये दोनों गुरु आगे–आगे तथा अन्य सभी लोग हाथ में कांसा पीतल से बने बाद्य यंत्र बजाते हुये माँ देवी को वापस लाये। इसलिए खेरवाड़ वंश (संथाल) ने दूर्गा पूजा से पहले कांसा, पीतल से बने बाद्य यंत्र करताल, घंटा आदि लेकर गाँव–गाँव, घर–घर नाचते गाते चंदा करते है, और उस चंदा को देवी दूर्गा की पूजा में लगाते है।

प्रशिक्षण एवं प्रलेखिकरण की आवश्यकता – आज हमारे देश की संस्कृति पाश्चात्य संस्कृति से प्रदूषित होने जा रहा है। दूर्गा पूजा को यहाँ दशंय पर्व भी कहते है। दूर्गा पूजा शहरी लागों के द्वारा आयोजन होता है तथा अत्याधुनिक ध्वनि यंत्र से सिनेमा संगीत आदि बजाया जाता है। जिससे लोग ज्यादा आकर्षित हो जाते है। इसके अलावा ग्रामीण जनजातिय सब अपनी रोजगार के लिए विभिन्न शहरों में पलायन करते है जिससे अपनी कलाओं पर असर पड़ता है। इसलिए नये पीढ़ी में इस नृत्य को जीवित रखने हेतु प्रशिक्षण एवं प्रलेखिकरण अति आवश्यक है।

प्रशिक्षण की रुपरेखा – यह प्रशिक्षण एवं प्रलेखिकरण फरवरी मार्च 2015 में आयोजित करने करने का प्रस्ताव है। जिसमें झारखण्ड के जनजातिय समुदाय संथालों द्वारा किये जाने वाले दशंय नृत्य के कुल 20 कलाकारों को प्रशिक्षण दी जाय तथा उसका परम्परा को जीवित रखने के लिए प्रलेखिकरण किया जायेगा। इस प्रशिक्षण में दो अनुभवी पारम्पारिक गुरुओं के साथ तीन बाद्य यंत्र सहायक के द्वारा सम्पन्न कराया जायेगा।

लाभ –

1. जनजातिय लोक नृत्य को बढ़ावा मिलेगा।
2. लुप्त होने वाले यह शैली जीवित होगा।
3. आदिवासी कलाकारों के विकास के साथ प्रोत्साहन मिलेगा।
4. इस कला को एक मंच मिलेगा।
5. गाँव का पलायन भी रुकेगा।
6. दशंय के परम्परा से देश के अन्य लोग भी अवगत होंगे।

नटराज कला केन्द्र

11/8/14

विविध सांस्कृतिक परम्पराओ के संरक्षण के अन्तर्गत जनजातिय नृत्य दशंई का प्रशिक्षण एवं प्रलेखन योजना का

परिचय

झारखण्ड के सूदुर ग्रामीण संथाल आदिवासीओं के परम्परा रहा है कि दुर्गा पुजा यानि दशहरा के पहले एक सप्ताह तक दशंई पर्व मनाया जाता है जो तृतीया तिथि को शुरू होकर नवमी तक चलता है । गाँव के लोग शुबह से ही विभिन्न गांव में नृत्य करते हुए घूमने की प्रथा है लेकिन आज धीरे धीरे ह्यास हाते जा रहा है केवल नाम मात्र का नियम किया जाता है। इस महत्वपुर्ण नृत्य परम्परा को अक्षुन्न वनाये रखने की उद्वेश्य से यह योजना तैयार की गई है। इसमें कुल 20 ग्रामीण युवाओं को 30 दिन का प्रशिक्षण दिया जायेगा । संथाली नृत्य दशंई की कहानी, पौराणिक मान्यता, गीत संगीत, वाद्ययंत्र, वेष भुषा,आदि विन्दुओं का ज्ञान दिया जायेगा इसके अलावा कब और क्यों किया जाता है ? पहले का दशंई और आज के दशंई में क्या अंतर है आज के विभिन्न मंच पर कैसे प्रस्तुति करना है । इन सभी का प्रशिक्षण अनुभवी गुरूओं के द्वारा दिया जायेगा । प्रशिक्षण की शुभारम्भ दिनांक 02/05/2015 से 30/05/2015 तक तथा प्रलेखिकरण का कार्य 25/10 /2015 तक पूरा कर लिया जाएगा । क्योकि दशंई का दशहरा से विशेष संबंध है इसलिए दुर्गा पूजा को दशंई पर्व भी कहते है ।